MASTER OF ARTS
IN
JAINOLOGY & PRAKRIT SAHITYA

Syllabus

(Semester scheme with CBCS)

M. A. Semester I & II-2017-18,

M. A. Semester III & IV- 2018-19 Onward

DEPARTMENT OF JAINOLOGY & PRAKRIT

FACULTY OF HUMANITIES

University College of Social Sciences and Humanities

MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSTIY

UDAIPUR – 313 001 (Rajasthan)

Dept F.C. 29.04.2017, Faculty of Hunanities 20/06/2017 & A. C. ....

DEPARMENT OF JAIN OLOGY AND PRAKRIT
University College of Social Sciences and Humanities
MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSTIY: UDAIPUR

MASTER OF ARTS IN JAINOLOGY & PRAKRIT SAHITYA

M A Sem I & II-2017-18,
M A Sem III & IV- 2018-19

1. **Duratation of the Course:** The Master of Arts (Jainology and Prakrit Sahitya) course will be of four semester duration to be conducted in two years. Each semester will be of approximately five months (minimum 90 working days in a semester) duration.

2. **Eligibility:** Candidates seeking admission to the first semester of Master of Arts in Jainology and Prakrit Sahitya must have a B.A. or an equivalent degree with 48% marks. Candidates who have studied Jainology and Prakrit Sahitya honors at B.A. level will be preferred.

3. **Admission:** Admission will be made on the basis of merit by B.A. or an equivalent degree with 48% marks or the marks obtained in the entrance examination conducted by the Department and fifty percent weightage to total marks obtained at the senior secondary and graduation level. The entrance examination shall be of multiple choice nature. It will be of 2 hrs. duration and will carry 100 marks. There will be total 100 questions of objective type. (Each correct answer carrying 1 marks).

4. **Seats: 40**

5. **Course Structue: M.A. Semester with CBCS, Jainology & Prakrit Sahitya**

DEPARTMENT OF JAINOLOGY AND PRAKRIT

UCSSH, MOHANLAL SUKHADIA UNIVERSITY, UDAIPUR

M. A. Semester Scheme Jainology and Prakrit (with CBCS), 2017-18 & 2018-19

Subject Code	Papers No.	Course with Code	Title of the Course	Course Credits	No. of Hrs. per Week	Weight age for Internal Exam.	Weight age for Sem. end Exam.	Total Marks	Duration of Sem. end Exam Hrs.
SEM I									
41541	Paper-I	MASR/1/CC/01	प्राकृत भाषा–साहित्य की परम्परा व इतिहास	04	04	20	80	100	3 hours
41542	Paper-II	MASR/1/CC/02	अर्द्धमागधी एवं प्राकृत कवि	04	04	20	80	100	3 hours
41543	Paper-III	MASR/1/CC/03	शौरसेनी प्राकृत	04	04	20	80	100	3 hours
41544	Paper-IV	MASR/1/CC/04	प्रकरण एवं पालि	04	04	20	80	100	3 hours
41545	Paper-V	MASR/1/CC/05	कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा	04	04	20	80	100	3 hours
41546	Paper-VI	MASR/1/CC/06	जैनधर्म, दर्शन एवं महात्मा गांधी	04	04	20	80	100	3 hours
				24	24	120	480	**600**	
SEM II									
42541	Paper-I	MASR/2/CC/01	कथा साहित्य एवं प्राकृत व्याकरण	04	04	20	80	100	3 hours
42542	Paper-II	MASR/2/CC/02	सट्टक साहित्य एवं मागधी सूत्र	04	04	20	80	100	3 hours
42543	Paper-III	MASR/2/CC/03	अर्द्धमागधी प्राकृत एवं अपभ्रंश कवि	04	04	20	80	100	3 hours
42544	Paper-IV	MASR/2/CC/04	महाराष्ट्री प्राकृत	04	04	20	80	100	3 hours
42545	Paper-V	MASR/2/CC/05	जैनविद्या के वैशिष्ट्य के विविध आयाम	04	04	20	80	100	3 hours
42546	Paper-VI	MASR/2/CC/06	बौद्ध दर्शन, समाज एवं कला	04	04	20	80	100	3 hours
		AUDIT Course		02	-	-	-	-	-
				24+2	24	120	480	**600**	

SEM III									
43541	Paper-I	MASR/3/CC/01	पाण्डुलिपि सम्पादन	04	04	20	80	100	3 hours
43542	Paper-II	MASR/3/CC/02	प्राकृत व्याकरण एवं अपभ्रंश भाषा	04	04	20	80	100	3 hours
43543-A	Paper-III-A or	MASR/3/EC/03-A	जैन आगम, ध्यान एवं योग	04	04	20	80	100	3 hours
43543-B	Paper-III-B	MASR/3/EC/03-B	जैन योग एवं स्वास्थ्य विज्ञान	04	04	20	80	100	3 hours
43544-A	Paper-IV-A or	MASR/3/EC/04-A	जैन सिद्धान्त एवं दर्शन	04	04	20	80	100	3 hours
43544-B	Paper-IV-B	MASR/3/EC/04-B	प्राकृत काव्य साहित्य–मीमांसा	04	04	20	80	100	3 hours
43545-A	Paper-V-A or	MASR/3/EC/05-A	जैन धर्म, समाज एवं संस्कृति	04	04	20	80	100	3 hours
43545-B	Paper-V-B	MASR/3/EC/05-B	जैनाचार का समाजशास्त्रीय अध्ययन	04	04	20	80	100	3 hours
43546-A	Paper-VI-A or	MASR/3/EC/06-A	प्राकृत आगम साहित्य –अर्द्धमागधी आगम	04	04	20	80	100	3 hours
43546-B	Paper-VI-B	MASR/3/EC/06-B	सर्वेक्षण एवं रिपोर्ट राइटिंग – प्रोजेक्ट वर्क	04	04	20	80	100	3 hours
				24	24	120	480	**600**	
SEM IV									
44541	Paper-I	MASR/4/CC/01	प्राकृत शिलालेख एवं छंद	04	04	20	80	100	3 hours
44542	Paper-II	MASR/4/CC/02	प्राकृत भाषा विज्ञान	04	04	20	80	100	3 hours
44543-A	Paper-III-A or	MASR/4/EC/03-A	जैन आगम एवं व्याख्या साहित्य	04	04	20	80	100	3 hours
44543-B	Paper-III-B	MASR/4/EC/03-B	पाण्डुलिपि सर्वेक्षण एवं सम्पादन	04	04	20	80	100	3 hours
44544-A	Paper-IV-A or	MASR/3/EC/04-A	जैन धर्म : स्वरूप एवं परम्परा	04	04	20	80	100	3 hours
44544-B	Paper-IV-B	MASR/4/EC/04-B	प्राकृत आगम साहित्य –शौरसेनी आगम	04	04	20	80	100	3 hours
44545-A	Paper V-A or	MASR/4/EC/05-A	जैन कला एवं स्थापत्य	04	04	20	80	100	3 hours
44545-B	Paper V-B	MASR/4/EC/05-B	प्राकृत काव्य साहित्य की विविध विधाएँ	04	04	20	80	100	3 hours
44546-A	Paper VI-A or	MASR/4/EC/06-A	प्राकृत के प्रमुख रचनाकारों पर प्रोजेक्ट वर्क	04	04	20	80	100	3 hours
44546-B	Paper VIB	MASR/4/EC/06-B	लघु शोध प्रबन्ध	04	04	20	80	100	3 hours
		AUDIT Course		02	-	-	-	-	-
				24+2	24	120	480	**600**	

Note: Postgraduate programmes in Social Sciences & Humanities enable students to develop expertise in their special areas of study and inculcate in them a keen interest in research. These courses are designed in such a way that students not only acquire the knowledge of the latest developments in their field but also try to contribute to further the developments. Postgraduate programmes are linked to the employment needs of different University Deptts, Jain Research Centres and social organizations, thus forging a vital link between the University and Society.

1. Core Courses and with choice Elective Courses (All Basic Courses) are 4 credits in each papers .(Semester I, II,III & IV)
2. Audit/OPEN ELECTIVES/SPECIALIZED COURSES (Advanced Courses) should be with 2 credits each (Semester II & IV).
3. Each student for each paper will submit Assignment/ Project work/ Seminar Presentation which will be mandatory for Core Courses, Electives and shall be assign 1 credit each.
4. Audit/Add On Courses (Open Elective Courses or Foundation Courses) :
   Each student will have to complete two add on courses of 2 credit each in II & IV semesters as compulsory courses, and 2 credits will have to complete as run the common paper. These subjects will have to run as Audit/Open Elective Papers in II & IV semesters:
   (1) Language & Communication Skills in English
   (2) Hindi Language and Computer Knowledge.
   (3) Rachanatmak Lekhan
   (4) Personality Development & Well-Being.
5. Semester III, Paper VI-B में सर्वेक्षण एवं रिपोर्ट राइटिंग – प्रोजेक्ट वर्क के अन्तर्गत निम्नांकित विषयों से सम्बद्ध रिपोर्ट राइटिंग लगभग 30–40 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी :–
   1 प्राकृत एवं जैनविद्या विभाग/शोध संस्थान/केन्द
   2 प्राकृत भाषा एवं साहित्य की प्राचीनता एवं विविधता का मूल्यांकन
   3 प्राकृत एवं जैन साहित्य में वर्णित पर्वों का सामाजिक और सांस्कृतिक वैशिष्ट्य
   4 जैनाचार शास्त्र अथवा जैन मंदिरों का सर्वेक्षण
   5 जैनविद्या के सैद्धान्तिक पक्षों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रयोगात्मक विश्लेषण
   6 प्राकृत एवं जैनविद्या की पाण्डुलिपियों और पाण्डुलिपि केन्द्रों में से चयनित किसी एक का कृति तथ केन्द्र का परिचय एवं सर्वेक्षण
6. Semester IV, Paper VI-A में प्राकृत के प्रमुख रचनाकारों पर प्रोजेक्ट वर्क के अन्तर्गत प्राकृत के प्रमुख रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व विषयक अवदान से सम्बद्ध प्रोजेक्ट वर्क लगभग 30–40 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी। इसमें प्राकृत, अपभ्रंश भाषा तथा साहित्य एवं जैनविद्या के किसी एक समर्थ आचार्य के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व विषयक अवदान को लेकर प्रोजेक्ट वर्क किया जा सकेगा। इसके विकल्प में Paper VI-B में प्राकृत, अपभ्रंश भाषा तथा साहित्य एवं जैनविद्या से सम्बद्ध किसी एक विषय पर लघु शोध प्रबन्ध लगभग 50–60 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी।

Faculty of Humanities

Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT- Core course/01/01

I Semester Paper - I : (PAPER CODE : 41541)

PAPER NAME – प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – प्रथम : Paper Code 41541

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – प्रथम	प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा	100 अंक
इकाई एक	प्राकृत भाषा का सामान्य परिचय, महत्ता एवं उसकी प्राचीनता के संदर्भ	20 अंक
इकाई दो	भारतीय भाषाएँ वैदिक एवं आधुनिक और प्राकृत का अन्तःसम्बन्ध एवं वैशिष्ट्य, प्राकृत भाषा के विभिन्न रूपों के रूपगठन के नियम एवं वैशिष्ट्य	20 अंक
इकाई तीन	प्राकृत भाषा के भेद–प्रभेद, प्राकृत साहित्य की विधिता का परिचयात्मक विश्लेषण, प्राकृत शिलालेखों में प्रयुक्त प्राकृत भाषा–स्वरूप एवं वैशिष्ट्य	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत आगम साहित्य का सर्वेक्षण : आगमिक परिचय, वाचनाएँ, आगमिक व्याख्या साहित्य – अर्द्धमागधी एवं शौरसेनी आगमिक व्याख्या ग्रन्थ	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत रचनानुवाद एवं अभ्यास : कारक/विभक्ति रचना (संज्ञा एवं सर्वनाम प्रयोग), कियारूप एवं कृदन्त के प्रयोगा– रचना एवं अभ्यास	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1 जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1

2. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा – आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री

3. मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन – प्रो. फूलचन्द्र जैन प्रेमी

4. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी – डॉ. ए. एम. घाटगे

5. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण – डॉ. आर. पिशेल

6. प्राकृत काव्य, सौरभ (1975) – डॉ. प्रेम सुमन जैन

7. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री

8. जैन धर्म – आचार्य सुशील मुनि

9. जैन धर्म – डॉ. राजेन्द्र मुनि शास्त्री

10. प्राकृत स्वंय शिक्षक – डॉ. प्रेम सुमन जैन

11. प्राकृत रचना सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Core course/01/02

I Semester Paper - II : (PAPER CODE : 41542)
PAPER NAME - **अर्धमागधी एवं प्राकृत कवि**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – द्वितीय : Paper Code 41542

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – तृतीय	**अर्धमागधी एवं प्राकृत कवि**	**100 अंक**
इकाई एक	आचारांग सूत्र (प्रथम श्रुत स्कन्ध) प्रथम अध्ययन, सत्थपरिणा का अर्थ एवं समीक्षा	20 अंक
इकाई दो	आचारांग सूत्र द्वितीय अध्ययन लोकविजय का अर्थ एवं समीक्षा	20 अंक
इकाई तीन	णायाधम्मकहा – पांचवां थावच्चापुत्त अध्ययन एवं सातवॉ रोहिणी अध्ययन	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत के प्रमुख कवि : महाकवि हाल, विमलसूरि, संघदासगणि, शिवार्य, आचार्य जिनदत्तसूरि, नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती, देवेन्द्रगणि	20 अंक
इकाई पांच	अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन, संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. प्राकृत साहित्य का इतिहास — डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
2. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1
3. आयारो — जैन विश्व भारती लाडनूं (राज.)
4. आगम युग का जैन दर्शन — पं. दलसुख मालवणिया
5. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा — आचार्य देवेन्द्र मुनि शास्त्री
6. मूलाचार का समीक्षात्मक अध्ययन — प्रो. फूलचन्द्र जैन प्रेमी
7. इन्ट्रोडक्शन टू अर्धमागधी — डॉ. घाटगे
8. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण — डॉ. पिशेल
9. प्राकृत काव्य, सौरभ (1975) — डॉ. प्रेम सुमन जैन
10. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास — डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
11. आचारांग सूत्र : यु. मधुकर मुनि, ब्यावर
12. ज्ञाताधर्म कथा : यु. मधुकर मुनि, ब्यावर

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT - Core course/01/03

I Semester Paper - III : (PAPER CODE : 41543)

PAPER NAME - **शौरसेनी प्राकृत**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – तृतीय : **Paper Code** 41543

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – चतुर्थ	**शौरसेनी प्राकृत**	**100 अंक**
इकाई एक	प्रवचनसार (ज्ञानाधिकार) – आचार्य कुन्दकुन्द गाथा – 1–92, अनुवाद एवं समीक्षा	20 अंक
इकाई दो	द्रव्यसंग्रह (नेमिचन्द्राचार्य) – व्याख्या एवं समीक्षा	20 अंक
इकाई तीन	भगवती आराधना – शिवार्य 1354 से 1433 गाथाएँ	20 अंक
इकाई चार	शौरसेनी आगम साहित्य का सर्वेक्षण	20 अंक
इकाई पांच	शौरसेनी प्राकृत भाषा का सोदाहरण विवेचन (अभिनव प्राकृत व्याकरण अध्ययन 10 पृ.383–99 तक)	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. प्रवचनसार सम्पा. ए.एन.उपाध्ये (भूमिका)

2. द्रव्यसंग्रह – नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती

3. भगवती आराधना (भावार्थ) भाग 2, स.प. के.सी.शास्त्री, जैन संस्कृति रक्षक संघ, सोलापुर, 1978

4. अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ.नेमिचन्द शास्त्री

5. महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग–2, डॉ.नेमिचन्द शास्त्री

6. शौरसेनी प्राकृत भाषा और व्याकरण – डॉ.प्रेम सुमन जैन, भारतीय विद्या प्रकाशन, दिल्ली–2001

7. शौरसेनी प्राकृत व्याकरण – डॉ.उदय चन्द जैन

8. जैन धर्म–दर्शन : डॉ.रमेश चन्द्र जैन

9. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास : प्रो.भागचन्द जैन

10. जैन संस्कृति कोश – डॉ.भागचन्द जैन, भाग 1 से 3

11. शौरसेनी प्राकृत भाषा साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – प्रो.राजा राम जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, Core course/01/04

I Semester Paper - IV : (PAPER CODE : 41544)

PAPER NAME - प्रकरण एवं पालि

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – चतुर्थ : **Paper Code** 41544

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – द्वितीय	प्रकरण एवं पालि	100 अंक
इकाई एक	मृच्छकटिक – महाकवि शूद्रक अंक 1, 2, 6 एवं 8वां (प्राकृत अंश मात्र गद्य एवं पद्य)	20 अंक
इकाई दो	पठित ग्रन्थ का भाषागत विवेचन एवं चरित्र–चित्रण	20 अंक
इकाई तीन	धम्मपद (प्रथम यमक एवं द्वितीय अप्पमाद वग्ग)	20 अंक
इकाई चार	पालि भाषा एवं साहित्य का परिचय	20 अंक
इकाई पांच	पठित ग्रन्थों का आलोचनात्मक अध्ययन (मृच्छकटिक एवं धम्मपद)	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. महाकवि शूद्रक — डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी

2. इन्ट्रोडक्शन, स्टडी ऑफ मृच्छकटिकम् — डॉ. जी. वी. देवस्थली

3. शूद्रक का मृच्छकटिक — डॉ. विश्वनाथ शर्मा

4. मृच्छकटिक एक आलोचनात्मक अध्ययन — डॉ. सुषमा

5. धम्मपद — डॉ. सत्य प्रकाश शर्मा, प्रकाशक साहित्य भण्डार, मेरठ

6. पालि साहित्य का इतिहास — भरत सिंह उपाध्याय

7. प्राकृत साहित्य का इतिहास — डॉ. जगदीश चन्द्र जैन

8. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा — डॉ. तारा डागा

9. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास — डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT – Core course/01/05

I Semester Paper - V : (PAPER CODE : 41545)

PAPER NAME - **कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – प्रचम : Paper Code 41545

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 केडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – प्रथम	**कथा साहित्य, मुक्तक एवं परम्परा**	**100 अंक**
इकाई एक	कुवलयमाला (उद्योतनसूरि) अनुच्छेद 1–12 तक सम्पा. ए.एन.उपाध्ये, प्राकृत विद्या मण्डल, अहमदाबाद	20 अंक
इकाई दो	वज्जालग्गं की 20 गाथाओं का व्याकरणात्मक मूल्यांकन एवं अनुवाद सम्पा. वज्जालग्गं में जीवन मूल्य – डॉ.के.सी.सोगानी, गाथा 1–20	20 अंक
इकाई तीन	पठित ग्रन्थों का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत रचना सौरभ (डॉ.के.सी.सोगानी) के पाठ 1 से 41 तक का अभ्यास, आठ वाक्यों का प्राकृत से हिन्दी में अनुवाद पूछना	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत की परम्परा का परिचय (प्राकृत भाषा एवं साहित्य की परम्परा के इतिहास का सामान्य ज्ञान)	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1.कुवलयमाला भाग–2, सम्पा. डॉ. ए. एन. उपाध्ये

2.कुवलयमालाकथा का सांस्कृतिक अध्ययन – प्रो. डॉ. प्रेम सुमन जैन

3.प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री

4.जैन धर्म – आचार्य सुशील मुनि

5.जैन धर्म – डॉ. राजेन्द्र मुनि शास्त्री

6.प्राकृत स्वंय शिक्षक – डॉ. प्रेम सुमन जैन

7.प्राकृत रचना सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT – Core course/01/06

I Semester Paper - VI : (PAPER CODE : 41546)

PAPER NAME - जैन धर्म – दर्शन एवं महात्मा गांधी

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

प्रथम सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – षष्ठ : Paper Code 41546

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के छः प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – पंचम	**जैन धर्म – दर्शन एवं महात्मा गांधी**	**100 अंक**
इकाई एक	**जैन धर्म, दर्शन का परिचय एवं विश्लेषण** अहिंसा, पंच महाव्रत, अनेकान्तवाद, समता एवं उसका स्वरूप	20 अंक
इकाई दो	महात्मा गाँधी का जीवन परिचय	20 अंक
इकाई तीन	गांधीवादी विचार – ईश्वर, सत्य, अहिंसा, पर्यावरण विज्ञान	20 अंक
इकाई चार	महात्मा गांधी पर जैन धर्म का प्रभाव	20 अंक
इकाई पांच	महात्मा गांधी के विचारों का भारतीय समाज पर प्रभाव	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1.जैन धर्म – डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

2.जैन धर्म – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन

3.जैन धर्म – आ. सुशील मुनि

4.जैन धर्म, दर्शन – डॉ. रमेश चन्द्र जैन

5.जैन धर्म – डॉ. राजेन्द्र मुनि शास्त्री

6.भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन

7.जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण – प्रो. प्रेम सुमन जैन

8.महात्मा गांधी और मानवता का भविष्य – प्रो. रामजी सिंह

9.गांधी दर्शन को विनोबाभावे की देन – डॉ. दशरथ सिंह

10. गांधी दर्शन – प्रो. रामजी सिंह

11. गांधी दर्शन – डॉ. धीरेन्द्र मोहन दत्त

12. गांधी दर्शन की भूमिका एवं भारतीय संस्कृति – डॉ. श्रीपाल शास्त्री

13. सत्य के साथ प्रयोग – एम. के. गांधी

14. Gandhi and Humanities - डॉ. हेराल्ड थोमकीन

15. गांधी, गीता एवं जैन धर्म – प्रो. सागरमल जैन

16. अहिंसा की बोलती मीनारें – राष्ट्रसन्त गणेशमुनि शास्त्री

17. शिक्षा विज्ञान – राष्ट्रसन्त गणेशमुनि शास्त्री

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT – Core course/02/01

II Semester Paper -I : (PAPER CODE : 42541)

PAPER NAME - **कथा साहित्य एवं प्राकृत व्याकरण**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

द्वितीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – प्रथम : Paper Code 42541

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – प्रथम	**कथा साहित्य एवं प्राकृत व्याकरण**	**100 अंक**
इकाई एक	समराइच्चकहा (प्रथम भव) सम्पा. डॉ.रमेशचन्द्र जैन साहित्य भण्डार, मेरठ	20 अंक
इकाई दो	पठित ग्रन्थ का भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	20 अंक
इकाई तीन	प्राकृत कथा साहित्य की समीक्षा	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत चरित साहित्य की समीक्षा	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत रचना सौरभ (डॉ.के.सी.सोगानी) के पाठ 42 से 84 का अभ्यास, किन्हीं आठ वाक्यों का हिन्दी से प्राकृत में अनुवाद पूछना	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. समराइच्चकहा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. झिनकू यादव

2. हरिभद्र के प्राकृत कथा साहित्य का आलोचनात्मक अनुशीलन – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

3. आचार्य हरिभद्रसूरि का जैन दर्शन में योगदान – डॉ. दर्शनप्रभा

4. प्राकृत का जैन कथा साहित्य – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन

5. वृहत्‌कथाकोश – डॉ.ए.एन.उपाध्ये (भूमिका)

6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री

7. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा – डॉ. तारा डागा

8. प्राकृत स्वयं शिक्षक – डॉ. प्रेम सुमन जैन

9. प्राकृत रचना सौरभ – डॉ. के. सी.सोगानी

10. बाल रूप प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदय चन्द्र जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, – Core course/02/02

II Semester Paper -II : (PAPER CODE : 42542)

PAPER NAME - सट्टक साहित्य एवं मागधी सूत्र

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

द्वितीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – द्वितीय : **Paper Code** 42542

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – द्वितीय	सट्टक साहित्य एवं मागधी सूत्र	100 अंक
इकाई एक	कर्पूरमंजरी राजशेखर (2, 3 एवं 4 जवनिका गद्य एवं पद्य) सम्पा. डॉ.रामप्रकाश पोद्दार, वैशाली, 1974	20 अंक
इकाई दो	पठित ग्रन्थ का भाषागत विवेचन एवं चरित्र–चित्रण	20 अंक
इकाई तीन	सट्टक साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन	20 अंक
इकाई चार	हेमशब्दानुशासन के चतुर्थपाद के सूत्र नं.287–302 (प्राकृत प्रवेशिका के मागधी सूत्र) आठ सूत्रों को देकर चार सूत्रों के सोदाहरण अर्थ पूछना आवश्यक है।	20 अंक
इकाई पांच	मागधी प्राकृत एवं शौरसेनी प्राकृत की प्रमुख विशेषतायें	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. कर्पूरमंजरी, स्टेनकानो (भूमिका)
2. आचार्य राजेशखर – डॉ. श्यामवर्मा
3. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र
4. हेमशब्दानुशासन (हिन्दी व्याख्या) – श्री प्यारचन्द जी महाराज
5. अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ. नेमिचन्द्र शास्त्री
6. प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदयचन्द्र जैन
7. प्राकृत प्रवेशिका – डॉ. कोमल चंद जैन

Faculty of Humanities

Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, – Core course/02/03

II Semester Paper -III : (PAPER CODE : 42543)

PAPER NAME - **अर्द्धमागधी प्राकृत एवं अपभ्रंश कवि**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

द्वितीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – तृतीय : **Paper Code** 42543

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – तृतीय	**अर्द्धमागधी प्राकृत एवं अपभ्रंश कवि**	**100 अंक**
इकाई एक	उत्तराध्ययन सूत्र – नमिप्रवज्या (1 से 62 गाथाएँ)	20 अंक
इकाई दो	उत्तराध्ययन सूत्र – विनय अध्ययन (1 से 20 गाथाएँ) केशी गौतम अध्ययन का मूल्यांकन	20 अंक
इकाई तीन	अर्द्धमागधी साहित्य का सर्वेक्षण	20 अंक
इकाई चार	अर्द्धमागधी प्राकृत भाषा के संज्ञा, सर्वनाम या क्रिया एवं कृदन्त के प्रमुख नियम एवं उदाहरण सहित विवेचन	20 अंक
इकाई पांच	अपभ्रंश के प्रमुख कविः स्वयंभू, पुष्पदन्त, वीरकवि, धनपाल, रइधू आदि के योगदान एवं उनके ग्रन्थों पर सामान्य प्रश्न	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. उत्तराध्ययन — एक समीक्षात्मक अध्ययन — आचार्य तुलसी
2. उत्तराध्ययनसूत्र — तेरापंथ महासभा — कलकत्ता
3. उत्तराध्ययनसूत्रम् — शिवमुनि
4. उत्तराध्ययन — अनु. संपा. आचार्य सुभद्र मुनि
5. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास — डॉ.नेमिचन्द शास्त्री
6. प्राकृत एवं अपभ्रंश साहित्य का इतिहास : डॉ.एल.बी.राम अनन्त
7. भविसयत्तकथा एवं अन्य अपभ्रंश कथा काव्य — डॉ.देवेन्द्र कुमार शास्त्री
8. अपभ्रंश भाषा और साहित्य — डॉ.देवेन्द्र कुमार जैन
9. रइधू साहित्य का आलोचनात्मक परिशीलन — डॉ.राजा राम जैन
10. प्राकृत काव्य सौरभ — डॉ.प्रेम सुमन जैन
11. अभिनव प्राकृत व्याकरण — डॉ.नेमी चन्द्र शास्त्री

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, – Core course/02/04

II Semester Paper -IV : (PAPER CODE : 42544)

PAPER NAME - महाराष्ट्री प्राकृत

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

द्वितीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – चतुर्थ : **Paper Code** 42544

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – चतुर्थ	महाराष्ट्री प्राकृत	100 अंक
इकाई एक	आख्यानकमणिकोश (आम्रदेवसूरि वृत्ति) तीसरा अधिकार 15वीं कथा रोहिण्याख्यानकम् संदर्भ ग्रंथः रोहिणीकहा (गाथा 1 से 100 तक) सम्पा. डॉ.प्रेमसुमन जैन, साहित्य संस्थान, उदयपुर	20 अंक
इकाई दो	गउडवहो (वाक्पतिराज) स. एन.जी.सुरू सन्दर्भ पुस्तिकाः वाक्पतिराज की लोकानुभूति, गाथाएं 1–50 संकलन– डॉ.के. सी.सोगानी, जयपुर–1983	20 अंक
इकाई तीन	पठित ग्रन्थों की व्याख्या एवं आलोचनात्मक अध्ययन	20 अंक
इकाई चार	महाराष्ट्री प्राकृत का परिचय एवं विशेषताएँ	20 अंक
इकाई पांच	महाराष्ट्री प्राकृत भाषा की व्याकरण संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के नियम	20 अंक

सहायक पुस्तकेंः–

1. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
2. प्राकृत साहित्य की रूपरेखा – डॉ. तारा डागा
3. अभिनव प्राकृत व्याकरण – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
4. जैन संस्कृति कोष भाग 1 से 3 – प्रो. भाग चन्द्र जैन
5. प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदय चन्द्र जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, – Core course/02/05

II Semester Paper -V : (PAPER CODE : 42545)

PAPER NAME - **जैनविद्या के वैशिष्ट्य के विविध आयाम**

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

द्वितीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – पंचम : **Paper Code** 42545

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – पंचम	**जैनविद्या के वैशिष्ट्य के विविध आयाम**	**100 अंक**
इकाई एक	जैनविद्या के प्रमुख सिद्धान्त एवं दार्शनिक परम्परा – प्राचीनता एवं विविधता	20 अंक
इकाई दो	जैन दर्शन में गुणस्थान, अनेकान्त की पृष्ठभूमि एवं सापेक्षवाद का तुलनात्मक अध्ययन, अनेकान्त एवं भाषा दर्शन, अनेकान्त की व्यवहार्यता।	20 अंक
इकाई तीन	जैन दर्शन में नय एवं निक्षेप की तात्त्विक पृष्ठभूमि, वचनव्यापार का नियामक – स्याद्वाद : सिद्धान्त एवं स्वरूप, सप्तभंग तथा उसकी समसामयिकता का विश्लेषण	20 अंक
इकाई चार	जैनाचार : श्रमणाचार का वैशिष्ट्य (महाव्रत, मूलगुण, समिति, ध्यान ण्वं तप) एवं श्रावकधर्म का वैशिष्ट्य (अणुव्रत दर्शन, प्रतिमाएँ, सप्तव्यसन–त्याग)	20 अंक
इकाई पांच	जैन संस्कृति की प्राचीनता के विविध आयाम, जैन पर्वों की महत्ता	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1.जैन धर्म — डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री

2.जैन धर्म — डॉ. जगदीश चन्द्र जैन

3.जैन धर्म — आ. सुशील मुनि

4.जैन धर्म, दर्शन — डॉ. रमेश चन्द्र जैन

5.जैन धर्म — डॉ. राजेन्द्र मुनि शास्त्री

6.भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान — डॉ. हीरालाल जैन

7.जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण — प्रो. प्रेम सुमन जैन

8.तत्त्वार्थसूत्र — पं. सुखलाल सिंघवी

9.जैन दर्शन — पं. महेन्द्र कुमार जैन

10 जैन दर्शन : मनन और मीमांसा — मुनि नथमल

11. जैन धर्म—दर्शन — डॉ. मोहन लाल मेहता

12.जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज — डॉ. जगदीश चन्द्र जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, – Core course/02/06

II Semester Paper -VI : (PAPER CODE : 42546)

PAPER NAME - बौद्ध दर्शन, समाज एवं कला

एम.ए. प्रथम वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

द्वितीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – षष्ठ : **Paper Code** 42546

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र – पंचम	बौद्ध दर्शन, समाज एवं कला	100 अंक
इकाई एक	बुद्धकालीन भारतीय परिस्थिति, महात्मा बुद्ध का जीवन–परिचय	20 अंक
इकाई दो	चार आर्य सत्य, मध्यम मार्ग, अष्टांगिक मार्ग	20 अंक
इकाई तीन	प्रतीत्यसमुत्पाद, ध्यान चतुष्टय, अनात्म अनीश्वरवाद, शील, समाधि एवं प्रज्ञा	20 अंक
इकाई चार	बौद्ध धर्म का समाज पर प्रभाव	20 अंक
इकाई पांच	बौद्ध धर्म, मूर्ति एवं स्थापत्य कला	20 अंक

सहायक पुस्तकेंः—

1. बौद्ध संस्कृति का इतिहास — प्रो.भाग चन्द्र जैन

2. बौद्ध दर्शन — राहुल सांकृत्यायन

3. बौद्ध दर्शन — बलदेव उपाध्याय

4. बौद्ध धर्म दर्शन — आचार्य नरेन्द्रनाथ

5. बौद्ध दर्शन तथा अन्य भारतीय दर्शन भाग 1—2, भरतसिंह उपाध्याय

6. भारत का बौद्ध स्थापत्य — ह.ग.शास्त्री

7. बौद्ध मूर्ति विधान — नवीन चन्द शास्त्री

8. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा एवं मन्दिर — वासुदेव उपाध्याय

9, संयुक्तनिकायपालि एक अध्ययन — डॉ. विजय कुमार जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, – Core course/03/01
III Semester Paper -I : (PAPER CODE : 43541)
PAPER NAME - पाण्डुलिपि सम्पादन

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य
तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – प्रथम : **Paper Code** 43541

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–प्रथम	**पाण्डुलिपि सम्पादन**	**100 अंक**
इकाई एक	पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त– 1. पाण्डुलिपि विज्ञान का स्वरूप एवं महत्त्व 2. पाण्डुलिपि की रचना–प्रक्रिया एवं चिन्ह	20 अंक
इकाई दो	1. पाण्डुलिपि प्राप्ति विवरण, बाह्य एवं अंतरंग परिचय 2. लिपि के प्रकार (ब्राह्मी, देवनागरी आदि)	20 अंक
इकाई तीन	पाण्डुलिपि सम्पादन के निम्नांकित प्रमुख सिद्धान्त 1. वर्ण–विकार एवं शब्द अर्थ की समस्या 2. पाठालोचन की प्रमुख प्रणालियां एवं पाठ–निर्माण	20 अंक
इकाई चार	1. काल–निर्धारण के प्रमुख आधार 2. प्रमुख ग्रन्थ – भण्डारों का परिचय एवं महत्त्व	20 अंक
इकाई पांच	सेतुबन्ध (प्रवरसेन) प्रथम सर्ग (1–40 गाथाएं, व्याख्या) सम्पा. डॉ. राजा राम जैन	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. पाण्डुलिपि सम्पादन कला — डॉ. राम गोपाल शर्मा दिनेश
2. पाण्डुलिपि विज्ञान — डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3. पाठालोचन की भूमिका — डॉ. कत्रे
4. सामान्य पाण्डुलिपि विज्ञान — डॉ. महावीर प्रसाद जैन
5. भारतीय पुरालिपि विद्या — डॉ. कृष्णदत्त वाजपेयी
6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री (पृ.247—296)
7. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 5, पं.अम्बालाल शाह
8. सेतुबन्ध — अनु. डॉ. राजा राम जैन
9. सेतुबन्धमहाकाव्य का आलोचनात्मक परिशीलन — प्रो. रामजी राय
10. सेतुबन्ध (प्रथम सर्ग) — डॉ. हरिशंकर पाण्डेय

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, – Core course/03/02

III Semester Paper –II : (PAPER CODE : 43542)

PAPER NAME - **प्राकृत व्याकरण एवं अपभ्रंश भाषा**

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – द्वितीय : **Paper Code** 43542

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–द्वितीय	**प्राकृत व्याकरण एवं अपभ्रंश भाषा**	**100 अंक**
इकाई एक	हेमशब्दानुशासन के तृतीय पाद के सूत्र 1–42 एवं 58–182 सूत्रों की सोदाहरण हिन्दी व्याख्या। इसके लिए –प्राकृत व्याकरण के शब्द रूप कारक एवं सर्वनाम से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्रों में से आठ सूत्रों को देकर चार की व्याख्या पूछना	20 अंक
इकाई दो	प्राकृत व्याकरण के अव्यय, सन्धि, समास, विशेषण एवं वाक्य प्रयोग से सम्बन्धित सोदाहरण नियम लिखना	20 अंक
इकाई तीन	अपभ्रंश व्याकरण एवं चरित काव्य, अपभ्रंश व्याकरण के प्रमुख नियम (संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया एवं कृदन्त के नियम)	20 अंक
इकाई चार	णायकुमारचरिउ, प्रथम संधि	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत भाषा में निबन्ध लेखन	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. हेमशब्दानुशासन (प्यार चन्द महाराज) की हिन्दी व्याख्या, ब्यावर
2. हेम प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदय चन्द्र जैन, 1983
3. हेमचन्द्र का शब्दानुशासन : एक अध्ययन – डॉ. नेमि चन्द शास्त्री
4. प्राकृतमार्गोपदेसिका – पं. बेचरदास दोशी
5. अपभ्रंश काव्यधारा – डॉ. जैन एवं डॉ. शर्मा, अहमदाबाद
6. णायकुमार चरिउ – हीरालाल जैन
7. प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदय चन्द्र जैन
8. प्राकृत स्वयं शिक्षक (खण्ड 1) – डॉ. प्रेम सुमन जैन (तृतीय आवृत्ति)
9. प्राकृत रचनोदय – डॉ. उदय चन्द्र जैन
10. अपभ्रंश का जैन साहित्य एवं जीवन–मूल्य – साध्वी डॉ. साधना
11. अपभ्रंश रचना सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, Elective course/03/03-A

III Semester Paper –III-A : (PAPER CODE : 43543-A)

PAPER NAME - जैन आगम, ध्यान एवं योग

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – तृतीय– ए : **Paper Code** 43543-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–तृतीय	**जैन आगम, ध्यान एवं योग**	**100 अंक**
इकाई एक	अर्द्धमागधी आगम, सूत्रकृतांग (प्रथम समय अध्ययन 83 गाथाएँ)	20 अंक
इकाई दो	उपासकदशांगसूत्र – प्रथम आनन्द श्रावक अध्ययन	20 अंक
इकाई तीन	पठित ग्रन्थों का दार्शनिक, भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	20 अंक
इकाई चार	जैन ध्यान – सिद्धान्त एवं प्रक्रिया, भेद–प्रभेद	20 अंक
इकाई पांच	जैन योग – सिद्धान्त एवं प्रक्रिया, व्याख्या	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. सूत्रकृतांग सूत्र – सं. मुनि मधुकर (हिन्दी व्याख्या सहित)
2. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3
3. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा – आ. देवेन्द्र मुनि शास्त्री
4. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
5. जैन साधना पद्धति में ध्यान योग – डॉ. साध्वी प्रियदर्शना
6. जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन – डॉ. अर्हतदास डिगे
7. ध्यान एक दिव्य साधना – आ. डॉ. शिवमुनि
8. योग बिन्दु के परिप्रेक्ष्य में जैन योग – साधना का समीक्षात्मक अध्ययन – डॉ. सुव्रत मुनि शास्त्री
9. जैन परम्परा में ध्यान का स्वरूप – डॉ. सीमा रानी शर्मा
10. योग मनन और संस्कार – आ. शिवमुनि
11. ध्यान विचार – आ. कलापूर्णसूरि
12. उपासकदशांग – साध्वी डॉ. स्मृति
13. सूत्रकृतांग का दार्शनिक अध्ययन – डॉ. नीलांजना श्री
14. सूत्रकृतांग – पं. हेमचन्द (व्याख्याकार)
15. ध्यान का स्वरूप – डॉ .हुकम चंद भारिल्ल
16. श्रावक धर्मदर्शन – उपाध्याय पुष्कर मुनि
17. सामान्य श्रावकाचार – पं. रतन चन्द्र भारिल्ल

Faculty of Humanities

Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, Elective course/03/03-B

III Semester Paper –III-B : (PAPER CODE : 43543-B)

PAPER NAME - जैन योग एवं स्वास्थ्य विज्ञान

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – तृतीय–बी : **Paper Code** 43543-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–तृतीय	**जैन योग एवं स्वास्थ्य विज्ञान**	**100 अंक**
इकाई एक	ध्यान शतक (जिनभद्रगणि) सम्पूर्ण	20 अंक
इकाई दो	जैन योग की परम्परा, विकास एवं भेद–प्रभेद तथा पठित ग्रन्थ पर आलोचनामत्क प्रश्न	20 अंक
इकाई तीन	जैन परम्परा में ध्यान एवं योग का सम्बन्ध, स्वास्थ्य विज्ञान एवं योग की प्राचीन परम्परा	20 अंक
इकाई चार	जैनाचार–आहार संयम एवं स्वास्थ्य का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक आधार , यौगिक क्रियाएं और स्वास्थ्य–चिन्तन, स्वास्थ्य–निर्माण एवं समाज–संरचना में जैन योग का प्रभाव,	20 अंक
इकाई पांच	जैन योग की समसामयिक व्यवहार्यता, जैन योग का आध्यत्मिक एवं वैज्ञानिक महत्त्व	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. ध्यान शतक (जिनभद्रगणि), वीर सेवा मंदिर, नई दिल्ली
2. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3
3. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा – आ. देवेन्द्र मुनि शास्त्री
4. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
5. जैन साधना पद्धति में ध्यान योग – डॉ. साध्वी प्रियदर्शना
6. जैन योग का आलोचनात्मक अध्ययन – डॉ. अर्हतदास डिगे
7. ध्यान एक दिव्य साधना – आ. डॉ. शिवमुनि
8. योग बिन्दु के परिप्रेक्ष्य में जैन योग – साधना का समीक्षात्मक अध्ययन – डॉ. सुव्रत मुनि शास्त्री
9. जैन परम्परा में ध्यान का स्वरूप – डॉ. सीमा रानी शर्मा
10. योग मनन और संस्कार – आ. शिवमुनि
11. ध्यान विचार – आ. कलापूर्णसूरि
12. उपासकदशांग – साध्वी डॉ. स्मृति
13. सूत्रकृतांग का दार्शनिक अध्ययन – डॉ. नीलांजना श्री
14. सूत्रकृतांग – पं. हेमचन्द (व्याख्याकार)
15. ध्यान का स्वरूप – डॉ .हुकम चंद भारिल्ल
16. श्रावक धर्मदर्शन – उपाध्याय पुष्कर मुनि
17. सामान्य श्रावकाचार – पं. रतन चन्द्र भारिल्ल

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/03/04-A

III Semester Paper –IV-A : (PAPER CODE : 43544-A)

PAPER NAME - जैन सिद्धान्त एवं दर्शन

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – चतुर्थ–ए : **Paper Code** 43544-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–चतुर्थ	जैन सिद्धान्त एवं दर्शन	100 अंक
इकाई एक	सम्मइसुत्तं (सिद्धसेन, तीसरा अनेकान्त खण्ड) गाथा 1–70 एवं समीक्षा	20 अंक
इकाई दो	दशवैकालिक सूत्र (1 से 4 अध्ययन)	20 अंक
इकाई तीन	जैन दर्शन के प्रमुख सिद्धान्त, स्याद्वाद एवं अनेकान्तवाद का विवेचन	20 अंक
इकाई चार	जैन दर्शन की समीक्षा– सत्तास्वरूप, सप्ततप्व एवं कर्म सिद्धान्त	20 अंक
इकाई पांच	जैन साहित्य का सांस्कृतिक मूल्यांकन– समाज, दर्शन, कला एवं शिक्षा आदि की दृष्टि से जैन साहित्य का मूल्यांकन	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. सन्मतिसूत्र (हिन्दी अनुवाद) – डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री
2. दशवैकालिक – मधुकर मुनि
3. तत्त्वार्थसूत्र – पं. सुखलाल सिंघवी
4. जैन दर्शन – पं. महेन्द्र कुमार जैन
5. जैन दर्शन : मनन और मीमांसा – मुनि नथमल
6. जैन धर्म–दर्शन – डॉ. मोहन लाल मेहता
7. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
8. कुवलयमालाकथा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. प्रेम सुमन जैन
9. ए क्रिटीकल स्टडीज ऑफ पउमरियं – डॉ. के. आर. चन्द्रा
10. स्टडीज इन भगवती सूत्र – डॉ. जे. सी .सिकदर
11. दशवैकालिक – आचार्य आत्माराम जी म. सा.

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/03/04-B

III Semester Paper –IV-B : (PAPER CODE : 43544-B)

PAPER NAME - प्राकृत काव्य साहित्य मीमांसा

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – चतुर्थ–बी : **Paper Code** 43544-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–चतुर्थ	प्राकृत काव्य साहित्य मीमांसा	100 अंक
इकाई एक	कुम्मापुत्तचरियं–अनन्तहंसकृत (चिन्तामणि दृष्टान्त)	20 अंक
इकाई दो	पउमचरियं (विमलसूरि) अंजना–पवनंजय कथा का मूल पाठ	20 अंक
इकाई तीन	कुमारपाल प्रतिबोध, आचार्य हेमचन्द्र (1–100 गाथाएँ)	20 अंक
इकाई चार	पठित ग्रन्थों पर आलोचनात्मक प्रश्न	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत काव्य साहित्य की परम्परा, विकास एवं विविध विधाएँ और वैशिष्ट्य, प्रमुख प्राकृत–काव्यकारों और उनकी कृतियों का परिचय	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. कुम्मापुत्तचरियं–अनन्तहंसकृत अनुवादक – डॉ. जिनेन्द्र कुमार जैन
2. पउमचरियं (विमलसूरि)
3. कुमारपाल प्रतिबोध – आचार्य हेमचन्द्र
4. जैन दर्शन – पं. महेन्द्र कुमार जैन
5. जैन दर्शन : मनन और मीमांसा – मुनि नथमल
6. जैन धर्म–दर्शन – डॉ. मोहन लाल मेहता
7. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
8. कुवलयमालाकथा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. प्रेम सुमन जैन
9. ए क्रिटीकल स्टडीज ऑफ पउमरियं – डॉ. के. आर. चन्द्रा
10. स्टडीज इन भगवती सूत्र – डॉ. जे. सी .सिकदर
11. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3
12. जैन आगम साहित्य : मनन और मीमांसा – आ. देवेन्द्र मुनि शास्त्री
13. प्राकृत साहित्य का इतिहास – डॉ. जगदीश चन्द्र जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, Elective course/03/05-A

III Semester Paper –V-A : (PAPER CODE : 43545-A)

PAPER NAME - जैन धर्म : समाज एवं संस्कृति

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – पंचम–ए : Paper Code 43545-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 केडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–पंचम	**जैन धर्म : समाज एवं संस्कृति**	**100 अंक**
इकाई एक	जैन धर्म उद्भव एवं विकास	20 अंक
इकाई दो	जैन धर्म का समाज पर प्रभाव	20 अंक
इकाई तीन	जैन धर्म की परम्परा – दिगम्बर एवं श्वेताम्बर	20 अंक
इकाई चार	जैन धर्म में नारी की स्थिति	20 अंक
इकाई पांच	जैन धर्म में पर्यावरण विज्ञान, शाकाहार वर्तमान युग में महत्त्व	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. जैन धर्म — आ. सुशील मुनि
2. जैन धर्म — डॉ.राजेन्द्र मुनि
3. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास — डॉ.भाग चन्द्र जैन
4. जैन धर्म—दर्शन — डॉ.रमेश चन्द्र जैन
5. जैन धर्म — पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री
6. धर्म दर्शन, मनन और मीमांसा — आ.देवेन्द्र मुनि
7. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण — प्रो.प्रेम सुमन जैन
8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान — डॉ.हीरालाल जैन
9. आगम युग में जैन दर्शन — पं.दलसुखभाई मालवणिया
10. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज — डॉ.जगदीश चन्द्र जैन
11. भारतीय वाड्मय में नारी — आचार्य देवेन्द्र मुनि
12. जिणधम्मो — आचार्य नानेश

Faculty of Humanities

Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, Elective course/03/05-B

III Semester Paper –V-B : (PAPER CODE : 43545-B)

PAPER NAME - जैनाचार का समाजशास्त्रीय आधार

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – पंचम–बी : Paper Code 43545-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 केडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–पंचम	जैनाचार का समाजशास्त्रीय आधार	100 अंक
इकाई एक	जैनाचार : अणुव्रत दर्शन की पृष्ठभूमि, अणुव्रतों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण	20 अंक
इकाई दो	इन्द्रिय संयम एवं आहारशुद्धि की सामाजिक पृष्ठभूमि, समाज–विकास का आधार शाकाहार	20 अंक
इकाई तीन	अपरिग्रह दर्शन की सार्वभौमिकता, विश्वशान्ति और सामाजिक समरसता का आधार – अपरिग्रहवाद : स्वरूप, परिणाम और विकृतियों के निवारण की जैन दृष्टि	20 अंक
इकाई चार	अणुव्रत दर्शन के विविध आयाम : अहिंसा, सत्य की सामाजिक पृष्ठभूमि – सिद्धान्त, प्रयोग एवं विश्लेषण	20 अंक
इकाई पांच	अहिंसा, समता, क्षमापना के परिप्रेक्ष्य में समाज–संरचना की जैन दृष्टि, रात्रि भेजनत्याग का आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक विश्लेषण	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. जैन धर्म — आ. सुशील मुनि
2. जैन धर्म — डॉ.राजेन्द्र मुनि
3. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास — डॉ.भाग चन्द्र जैन
4. जैन धर्म—दर्शन — डॉ.रमेश चन्द्र जैन
5. जैन धर्म — पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री
6. धर्म दर्शन, मनन और मीमांसा — आ.देवेन्द्र मुनि
7. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण — प्रो.प्रेम सुमन जैन
8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान — डॉ.हीरालाल जैन
9. आगम युग में जैन दर्शन — पं.दलसुखभाई मालवणिया
10. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज — डॉ.जगदीश चन्द्र जैन
11. भारतीय वाड्मय में नारी — आचार्य देवेन्द्र मुनि
12. जिणधम्मो — आचार्य नानेश

Faculty of Humanities

Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, Elective course/03/06-A

III Semester Paper –VI-A : (PAPER CODE : 43546-A)

PAPER NAME - **प्राकृत आगम साहित्य – अर्द्धमागधी आगम**

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – षष्ठ–ए : **Paper Code** 43546-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–पंचम	**प्राकृत आगम साहित्य – अर्द्धमागधी आगम**	**100 अंक**
इकाई एक	आयारो (आचारांग सूत्र) प्रथम एवं द्वितीय अध्ययन	20 अंक
इकाई दो	समवायांग (चतुर्थ समवाय)	20 अंक
इकाई तीन	नन्दी सूत्र (अवधिज्ञान एवं मनःपर्यय ज्ञान का प्रसंग)	20 अंक
इकाई चार	पठित ग्रन्थों पर आलोचनात्मक प्रश्न	20 अंक
इकाई पांच	जैनागमों का भाषात्मक एवं मीमांसात्मक विवेचन तथा अर्द्धमागधी प्राकृत व्याकरण की सामान्य विशेषताएँ	20 अंक

सहायक पुस्तकेंः—

1. आयारो (आचारांग सूत्र) वाचना प्रमुख — आचार्य तुलसी एवं सम्पादक — आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भरती, लाडनूँ
2. समवायांग (चतुर्थ समवाय) वाचना प्रमुख — आचार्य तुलसी एवं सम्पादक — आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भरती, लाडनूँ
3. नन्दी सूत्र वाचना प्रमुख — आचार्य तुलसी एवं सम्पादक — आचार्य महाप्रज्ञ, जैन विश्व भरती, लाडनूँ
4. जैन धर्म—दर्शन — डॉ.रमेश चन्द्र जैन
5. जैन धर्म — पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री
6. धर्म दर्शन, मनन और मीमांसा — आ.देवेन्द्र मुनि
7. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण — प्रो.प्रेम सुमन जैन
8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान — डॉ.हीरालाल जैन
9. आगम युग में जैन दर्शन — पं.दलसुखभाई मालवणिया
10. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज — डॉ.जगदीश चन्द्र जैन
11. भारतीय वाड्मय में नारी — आचार्य देवेन्द्र मुनि
12. जिणधम्मो — आचार्य नानेश

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, Elective course/03/06-B

III Semester Paper –VI-B : (PAPER CODE : 43546-B)

PAPER NAME - सर्वेक्षण एवं रिपोर्ट राइटिंग

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

तृतीय सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – षष्ठ–बी : **Paper Code** 43546-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 केडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–पंचम	**सर्वेक्षण एवं रिपोर्ट राइटिंग**	**100 अंक**
इकाई एक	प्राकृत एवं जैनविद्या विभाग/शोध संस्थान/केन्द प्राकृत भाषा एवं साहित्य की प्राचीनता एवं विविधता का मूल्यांकन	20 अंक
इकाई दो	प्राकृत एवं जैन साहित्य में वर्णित पर्वों का सामाजिक और सांस्कृतिक वैशिष्ट्य	20 अंक
इकाई तीन	जैनाचार शास्त्र अथवा जैन मंदिरों का सर्वेक्षण	20 अंक
इकाई चार	जैनविद्या के सैद्धान्तिक पक्षों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रयोगात्मक विश्लेषण	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत एवं जैनविद्या की पाण्डुलिपियों और पाण्डुलिपि केन्द्रों में से चयनित किसी एक का कृति तथा केन्द्र का परिचय एवं सर्वेक्षण	20 अंक

विशेष नोट – Semester III, Paper VI-B में सर्वेक्षण एवं रिपोर्ट राइटिंग – प्रोजेक्ट वर्क के अन्तर्गत उपर्युक्त विषयों से सम्बद्ध रिपोर्ट राइटिंग लगभग 30–40 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा, जिसका मूल्यांकन वि.वि. द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी :–

सहायक पुस्तकें:–

1. जैन धर्म – आ. सुशील मुनि
2. जैन धर्म – डॉ.राजेन्द्र मुनि
3. जैन दर्शन और संस्कृति का इतिहास – डॉ.भाग चन्द्र जैन
4. जैन धर्म–दर्शन – डॉ. रमेश चन्द्र जैन
5. जैन धर्म – पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री
6. धर्म दर्शन, मनन और मीमांसा – आ.देवेन्द्र मुनि
7. जैन संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण – प्रो.प्रेम सुमन जैन
8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ.हीरालाल जैन
9. आगम युग में जैन दर्शन – पं.दलसुखभाई मालवणिया
10. जैन आगम साहित्य में भारतीय समाज – डॉ.जगदीश चन्द्र जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Core course/04/01

IV Semester Paper -I : (PAPER CODE : 44541)

PAPER NAME - प्राकृत शिलालेख एवं छन्द

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – प्रथम : **Paper Code** 44541

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 केडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–प्रथम	प्राकृत शिलालेख एवं छन्द	100 अंक
इकाई एक	प्राकृत शिलालेखः–अशोक के 1 से 8 शिलालेख (गिरनार पाठ) एवं खारवेल के शिलालेख का सटिप्पण अनुवाद	20 अंक
इकाई दो	प्राकृत के प्रमुख शिलालेखों पर सामान्य प्रश्न	20 अंक
इकाई तीन	खारवेल के शिलालेखों का सटिप्पण अनुवाद	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत एवं अपभ्रंश छन्द–निम्नलिखित प्राकृत छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण–गाहा, पथ्या, विपुला, उग्गाहा, गाहू, सिंहणी, गाहिणी, स्कन्धक, **अपभ्रंश के छन्द–** द्विपदि कड़वक, घत्ता, पज्झडिका, हेला, चौपाइया।	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत का लाक्षणिक साहित्य – छन्द, अलंकार एवं कोश के प्रमुख ग्रन्थों का परिचय	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. अशोक – डॉ. भण्डारक
2. अशोक – राधा कुमुद मुखर्जी
3. खारवेल शिलालेख – डॉ. शशिकान्त जैन
4. छन्दानुशासन – हेमचन्द
5. प्राकृत पैंगलम (सम्बन्धित अंश)
6. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास – डॉ. गुलाब चन्द चौधरी
7. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ. नेमिचन्द शास्त्री
8. अपभ्रंश अभ्यास सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Core course/04/02

IV Semester Paper -II : (PAPER CODE : 44542)

PAPER NAME - प्राकृत भाषा विज्ञान

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – द्वितीय : **Paper Code** 44542

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–द्वितीय	प्राकृत भाषा विज्ञान	100 अंक
इकाई एक	प्राकृत व्याकरण, प्राकृत व्याकरण के क्रिया एवं कृदन्त से सम्बन्धित हेमशब्दानुशासन के निर्धारित सूत्र में से आठ सूत्रों को देकर चार सूत्रों की व्याख्या पूछना (139 से 182 तक)	20 अंक
इकाई दो	प्राकृत व्याकरण के प्रमुख ग्रन्थ एवं ग्रन्थकारों का सामान्य परिचय	20 अंक
इकाई तीन	भाषा विज्ञान एवं पालि–प्राकृत, भारतीय आर्य भाषाओं के विकास का संक्षिप्त इतिहास (वैदिक भाषा, पालि, लौकिक संस्कृत, अपभ्रंश एवं आधुनिक भाषाओं के साथ प्राकृत का सम्बन्ध)	20 अंक
इकाई चार	ध्वनि परिवर्तन के प्रमुख नियम एवं प्राकृत (लोप, आगम, विपर्यय, ह्रस्वमात्रा नियम) समीकरण, विषमीकरण, स्वरभक्ति, संधि आदि के सोदाहरण, नियम) इसके लिए प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डॉ.नेमिचन्द्र शास्त्री (अध्याय प्रथम पृ.1 से 23 एवं अध्याय पंचम पृ.113 से 153 का सम्बन्धित अंश का अध्ययन अपेक्षित)	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत में निबन्ध लेखन	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. हेमशब्दानुशासन (प्यार चन्द महाराज) की हिन्दी व्याख्या, ब्यावर
2. हेम प्राकृत व्याकरण – डॉ. उदय चन्द्र जैन, 1983
3. प्राकृत स्वयं शिक्षक (खण्ड–1) – डॉ. प्रेम सुमन जैन
4. प्राकृत रचनोदय – डॉ. उदय चन्द्र जैन
5. प्राकृत भाषाओं का तुलनात्मक व्याकरण एवं उनके प्राक् संस्कृत तत्त्व – डॉ. के. आर. चन्द्रा, अहमदाबाद।
6. भाषा विज्ञान की रूपरेखा – डॉ. भोलानाथ तिवारी
7. भाषा विज्ञान की रूपरेखा – डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री
8. अपभ्रंश रचना सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर
9. अपभ्रंश अभ्यास सौरभ – डॉ. के. सी. सोगानी, जयपुर
10. प्राकृत हिन्दी कोश – डॉ. उदय चन्द्र जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.) - Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/03-A

IV Semester Paper –III-A : (PAPER CODE : 44543-A)

PAPER NAME - जैन आगम एवं व्याख्या साहित्य

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – तृतीय – ए : **Paper Code** 44543-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–तृतीय	**जैन आगम एवं व्याख्या साहित्य**	**100 अंक**
इकाई एक	शौरसेनी आगम, कार्तिकेयानुप्रेक्षा (स्वामीकार्तिकेय) गाथा 253 से 301 (ज्ञानस्वरूप एवं नय वर्णन) – डॉ. ए. एन. उपाध्ये	20 अंक
इकाई दो	पंचास्तिकाय (आ.कुन्दकुन्द) द्वितीय अधिकार (गाथा 105 से 153 नव पदार्थ एवं पुद्गल अस्तिकाय विवेचन)	20 अंक
इकाई तीन	पठित ग्रन्थों का दार्शनिक, भाषागत एवं आलोचनात्मक अध्ययन	20 अंक
इकाई चार	आगम के व्याख्या साहित्य का परिचय एवं महत्त्व (निर्युक्ति, चूर्णि, भाष्य, टीका)	20 अंक
इकाई पांच	शौरसेनी आगम की प्रमुख टीकायें	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. कार्तिकेयानुप्रेक्षा — डॉ. ए. एन. उपाध्ये
2. पंचास्तिकाय — पं. हीरा लाल शास्त्री
3. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3
4. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान — डॉ. हीरा लाल शास्त्री
5. प्राकृत साहित्य का इतिहास — डॉ. जगदीश चन्द्र जैन
6. प्राकृत भाषा एवं साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास — डॉ. नेमि चन्द शास्त्री
7. जैन संस्कृति कोश, भाग 1—3 — प्रो. भाग चन्द जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/03-B

IV Semester Paper –III-B : (PAPER CODE : 44543-A)

PAPER NAME - पाण्डुलिपि सर्वेक्षण एवं सम्पादन

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – तृतीय – बी : **Paper Code** 44543-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–तृतीय	पाण्डुलिपि सर्वेक्षण एवं सम्पादन	100 अंक
इकाई एक	पाण्डुलिपि विज्ञान का सामान्य परिचय, इतिहास, परम्परा एवं प्रकार तथा लेखन सामग्री	20 अंक
इकाई दो	पाण्डुलिपियों के संग्रहण केन्द्रों का परिचय, सर्वेक्षण एवं कृति चयन की प्रविधि तथा विभिन्न ग्रन्थ सूचियों (केटेलॉग्स) का परिचय	20 अंक
इकाई तीन	पाण्डुलिपि–सम्पादन के नियम : सैद्धान्तिक विश्लेषण	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत पाण्डुलिपि ग्रन्थ की निर्धारित किसी एक पाठ्य कृति का सम्पादन (लगभग40–50 गाथाओं अथवा 4 पृष्ठों का सम्पादन कार्य)	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत पाण्डुलिपि ग्रन्थ की निर्धारित कृति का अनुवाद (हिन्दी अथवा अंग्रेजी अनुवाद), कृति परिचय एवं अध्ययन	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. पाण्डुलिपि सम्पादन कला — डॉ. राम गोपाल शर्मा दिनेश
2. पाण्डुलिपि विज्ञान — डॉ. सत्येन्द्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
3. पाठालोचन की भूमिका — डॉ. कत्रे
4. सामान्य पाण्डुलिपि विज्ञान — डॉ. महावीर प्रसाद जैन
5. भारतीय पुरालिपि विद्या — डॉ. कृष्णदत्त वाजपेयी
6. प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, डॉ. नेमिचन्द शास्त्री (पृ.247—296)
7 जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 1, 2 एवं 3
8. जैन साहित्य का वृहत् इतिहास भाग 5, पं.अम्बालाल शाह
9 भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान — डॉ. हीरा लाल शास्त्री
10 प्राकृत साहित्य का इतिहास — डॉ. जगदीश चन्द्र जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT - Elective course/04/04-A

IV Semester Paper –IV-A : (PAPER CODE : 44544-A)

PAPER NAME - जैन धर्म : स्वरूप एवं परम्परा

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – चतुर्थ – ए : **Paper Code** 44544-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 केडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–चतुर्थ	जैन धर्म : स्वरूप एवं परम्परा	100 अंक
इकाई एक	समणसुत्तं चयनिका (डॉ.के.सी.सोगानी) गाथा 1–60	20 अंक
इकाई दो	जैन आचार मीमांसा, गृहस्थाचार, श्रमणाचार, ज्ञान के प्रकार (मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यय, केवलज्ञान)	20 अंक
इकाई तीन	जैन धर्म का स्वरूप – गुणस्थान, रत्नत्रय एवं मोक्ष स्वरूप	20 अंक
इकाई चार	तीर्थंकर परम्परा, ऋषभदेव, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और महावीर का जीवन–दर्शन	20 अंक
इकाई पांच	श्रमण परम्परा उमास्वाति, समन्तभद्र, अकलंक, प्रभाचन्द्र, हेमचन्द्र, यशोविजय दार्शनिक आचार्यो के अवदान	20 अंक

सहायक पुस्तकेंः–

1. जैन दर्शन – मनन और मीमांसा – आ. देवेन्द्रमुनि

2. समणसुत्तं, प्रकाशक सर्वसेवा संघ, वाराणसी

3. जैन आचार और सिद्धान्त एवं स्वरूप – आ. देवेन्द्र मुनि

4. स्टडीज इन जैन फिलासाफी – डॉ. नथमल

5. परमात्म प्रकाश एवं योगसार – डॉ. ए. एन .उपाध्ये

6. जैन धर्म, पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर

7. जैन धर्म के प्रभावक आचार्य – साध्वी संघमित्रा

8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान – डॉ. हीरालाल जैन

9. श्रावक धर्मदर्शन – उपाध्याय पुष्कर मुनि

10.जैन दर्शन एवं कबीर–एक तुलनात्मक अध्ययन – डॉ0 मन्जूश्री

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT - Elective course/04/04-B

IV Semester Paper –IV-B : (PAPER CODE : 44544-B)

PAPER NAME - प्राकृत आगम साहित्य – शौरसेनी आगम

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – चतुर्थ – बी : **Paper Code** 44544-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है।प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 केडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–चतुर्थ	**प्राकृत आगम साहित्य –शौरसेनी आगम**	**100 अंक**
इकाई एक	षट्खण्डागम – धरसेनाचार्य, पुष्पदन्त एवं भूतबलि (जीवट्ठान, सत्प्ररूपणा प्रथम खण्ड, के प्रथम 1से 46 सूत्र)	20 अंक
इकाई दो	समयसार – आचार्य कुन्दकुन्द (द्वितीय अधिकार)	20 अंक
इकाई तीन	मूलाचार – आचार्य वट्टकेर स्वामी (षडावश्यक अधिकार)	20 अंक
इकाई चार	पठित ग्रन्थों पर आलोचनात्मक प्रश्न	20 अंक
इकाई पांच	जैनागमों का भाषात्मक एवं मीमांसात्मक विवेचन तथा शौरसेनी प्राकृत व्याकरण की सामान्य विशेषताएँ	20 अंक

सहायक पुस्तकें:—

1. जैन दर्शन — मनन और मीमांसा — आ. देवेन्द्रमुनि

2. षट्खण्डागम — धरसेनाचार्य, पुष्पदन्त एवं भूतबलि (जीवट्ठान, सत्प्ररूपणा प्रथम खण्ड) सोलापुर

3. जैन आचार और सिद्धान्त एवं स्वरूप — आ. देवेन्द्र मुनि

4. स्टडीज इन जैन फिलासाफी — डॉ. नथमल

5. समयसार — आचार्य कुन्दकुन्द

6. जैन धर्म, पं.कैलाश चन्द्र शास्त्री, मुजफ्फरनगर

7. जैन धर्म के प्रभावक आचार्य — साध्वी संघमित्रा

8. भारतीय संस्कृति में जैन धर्म का योगदान — डॉ. हीरालाल जैन

9. श्रावक धर्मदर्शन — उपाध्याय पुष्कर मुनि

10. मूलाचार — आचार्य वट्टकेर स्वामी, सम्पादक —डॉ. फूलचन्द जैन ''प्रेमी'', वाराणसी

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/05-A

IV Semester Paper –V-A : (PAPER CODE : 44545-A)

PAPER NAME - **जैन कला एवं स्थापत्य**

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – पंचम – ए : Paper Code 44545-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–पंचम	**जैन कला एवं स्थापत्य**	**100 अंक**
इकाई एक	जैन कला का उद्भव एवं विकास	20 अंक
इकाई दो	जैन धर्म और कला का सम्बन्ध	20 अंक
इकाई तीन	जैन शिल्प, स्थापत्य कला – एलोरा, खजुराहो एवं माउण्ट आबु के मन्दिर	20 अंक
इकाई चार	मथुरा की जैन मूर्तिकला एवं श्रवणबेलगोला की जैन मूर्तियां	20 अंक
इकाई पांच	जैन चित्रकला – अजन्ता, एलोरा की गुफायें	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. जैन धर्म – पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री
2. जैन चित्र कल्पद्रुम – साराभाई नवाब, 1936, अहमदाबाद
3. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा और मन्दिर – वासुदेव उपाध्याय
4. भारतीय मूर्तिकला का इतिहास – रमानाथ मिश्र
5. जैन संस्कृति कोश – प्रो. भाग चन्द्र जैन भाग 1–3
6. स्टडीज इन जैन आर्ट – यू. जी. शाह, 1955, बनारस
7. जैन मिनिएचर पेंटिंग्स फ्राम वेस्टर्न इंडिया – मोतीचन्द, 1914
8. कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. प्रेम सुमन जैन
9. पउमचरियं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/05-B

IV Semester Paper –V-B : (PAPER CODE : 44545-B)

PAPER NAME - प्राकृत काव्य साहित्य की विविध विधाएँ

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – पंचम – बी : Paper Code 44545-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

प्रश्न पत्र–पंचम	**प्राकृत काव्य साहित्य की विविध विधाएँ**	**100 अंक**
इकाई एक	प्राकृत साहित्य का ऐतिहासिक परिचय एवं प्राकृत काव्य साहित्य की विधाएँ और महत्ता	20 अंक
इकाई दो	महाकाव्यों की परम्परा एवं प्राकृत महाकाव्यों का स्वरूप : ऐतिहासिक, पौराणिक एवं शास्त्रीय महाकाव्य	20 अंक
इकाई तीन	प्राकृत चरित एवं कथा साहित्य का वैविध्य एवं विशिष्ट्य	20 अंक
इकाई चार	प्राकृत खण्डकाव्य एवं मुक्तककाव्य : परम्परा एवं विकास	20 अंक
इकाई पांच	प्राकृत काव्य साहित्य पर शोधात्मक विमर्श : 1. सम्पादित एवं समालोचनात्मक शोध कार्य, 2. शोध की भावी दृष्टि, 3.शोध संस्थाएँ अवं आधुनिक शोध कर्ताओं का परिचयात्मक विश्लेषण	20 अंक

सहायक पुस्तकें:–

1. जैन धर्म – पं. कैलाश चन्द्र शास्त्री
2. जैन चित्र कल्पद्रुम – साराभाई नवाब, 1936, अहमदाबाद
3. प्राचीन भारतीय स्तूप, गुफा और मन्दिर – वासुदेव उपाध्याय
4. भारतीय मूर्तिकला का इतिहास – रमानाथ मिश्र
5. जैन संस्कृति कोश – प्रो. भाग चन्द्र जैन भाग 1–3
6. स्टडीज इन जैन आर्ट – यू. जी. शाह, 1955, बनारस
7. जैन मिनिएचर पेंटिंग्स फ्राम वेस्टर्न इंडिया – मोतीचन्द, 1914
8. कुवलयमालाकहा का सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. प्रेम सुमन जैन
9. पउमचरियं का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक अध्ययन – डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/06-A

IV Semester Paper –VI-A : (PAPER CODE : 44546-A)

PAPER NAME - प्राकृत के प्रमुख रचनाकार – प्रोजेक्ट वर्क

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – षष्ठ – ए : Paper Code 44546-A

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

Note :Semester IV, Paper VI-A में प्राकृत के प्रमुख रचनाकारों पर प्रोजेक्ट वर्क के अन्तर्गत प्राकृत के प्रमुख रचनाकारों के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व विषयक अवदान से सम्बद्ध प्रोजेक्ट वर्क लगभग 30–40 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी। इसमें प्राकृत, अपभ्रंश भाषा तथा साहित्य एवं जैनविद्या के किसी एक समर्थ आचार्य के व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व विषयक अवदान को लेकर प्रोजेक्ट वर्क किया जा सकेगा। इसके विकल्प में Paper VI-B में प्राकृत, अपभ्रंश भाषा तथा साहित्य एवं जैनविद्या से सम्बद्ध किसी एक विषय पर लघु शोध प्रबन्ध लगभग 50–60 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी।

Faculty of Humanities
Master of Arts (M.A.)- Jainology and Prakrit

Subject – JAINOLOGY & PRAKRIT, - Elective course/04/06-B

IV Semester Paper –VI-B : (PAPER CODE : 44546-B)

PAPER NAME - **लघु शोध प्रबन्ध**

एम.ए. द्वितीय वर्ष : जैनविद्या एवं प्राकृत साहित्य

चतुर्थ सेमेस्टर : प्रश्न पत्र – षष्ठ – बी : Paper Code 44546-B

इस सेमेस्टर में 80–80 अंकों के पांच प्रश्न–पत्र होंगे एवं प्रत्येक प्रश्न–पत्र में 20–20 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए निर्धारित हैं। प्रत्येक प्रश्नपत्र 100 अंक का है। प्रत्येक प्रश्न–पत्र 4 क्रेडिट का होगा, जिसमें 4 कक्षाएँ प्रति सप्ताह प्रत्येक प्रश्न पत्र की की जायेंगी।

NOTE ;- Semester IV, Paper VI-B में प्राकृत, अपभ्रंश भाषा तथा साहित्य एवं जैनविद्या से सम्बद्ध किसी एक विषय पर लघु शोध प्रबन्ध लगभग 50–60 पृष्ठों में तैयार करके जमा करना होगा, जिसका मूल्यांकन विश्वविद्यालय द्वारा 80 अंकों से कराया जायेगा तथा 20 अंकों की इन्टरनल मौखिक परीक्षा स्थानीय/विभागीय विशेषज्ञों द्वारा ली जायेगी।